प्रकासक :
दिव्या प्रकासन
सुजानगढ़ (राजस्थान)

पोथी मिलण री जगां
श्री जंप्रकास सेठिया
३, मंगो लेन
कलकत्ता-७०० ००१

सगळा हककार लिखारै रा है।

मोल : पचास रिपिया

छापणियों :
दि टैक्निकल एण्ड जनरल प्रेस
१७, क्रैड लेन,
कलकत्ता-७०० ०६९

दिवलै री लौ

आ 'सतवाणी' कोई सन्तां, अवधूतां री भाख्योड़ी कोनी फेर भी मैं म्हारी इण पोथी रो नांव 'सतवाणी' दियो है। मनै ठा है' क स्याणा मिनखां नै ओ नांव गमतो कोनी लागै इण उपरांत भी बै इण पोथी नै घणै हेत स्यूं पढसी इण रो मनै पूरो पतियारो है।

दिवलो सूरज री ठौड कोनी ले सकै पण वो आप री लौ री नोक स्यूं अंधेरै रै दुरभेद परकोटै मे एक नान्हूं सो'क छेक्लो जरूर कर सकै है जकै स्यू ही वगत आया सूरज भगवान बारै पधारसी'र आखी सिस्टी नै आप रो कंचन वरण उजास बांटसी।

मैं ही म्हारै दीवट पर बैठो म्हारी निमली पडती दीठ स्यू जे बीं आतै उजास री पैली किरण नै देख सक स्यू तो निज नै घणो वडभागी मान स्यू।

वसन्त पंचमी
विक्रम सं० २०४४

कन्हैयालाल सेठिया

	मोती	सीपी
१.	हुवै न सत् री परपरा	एक
२.	रयो हुवै निज रो धणी	"
३.	भेख धरचां टोलं रल्यां	"
४	दीठ हुयां सत भाससी	दो
५.	नहीं भेख मे दीठ मे	"
६.	थित गत रो समतोल है	"
७.	मोटो समझं आप नै	तीन
८	घड़ी समझ जिण नै कसी	"
९.	कुदरत पालं बीज नै	"
१०.	सवद चल् कोनीं सकं	चार
११.	स्याही कागद कलम जड	"
१२	जकी चेतणा जीव मे	"
१३.	पडसी पाछो खेत मे	पाच
१४.	कालं मालां री रयण	"
१५	सूरज कद आथं उगं	"
१६.	वरस्यो धारोधार पण	छह
१७.	काल् नही टूटै, जकी	"
१८	तिरवालो घी तैल रो	"
१९.	जका सूर रै वस रा	सात
२०.	जाऊ जाऊ मन करै	"
२१.	चिणियो आंगल् नींव पर	"
२२.	खुली छोड मत आख नै	आठ
२३.	रमै रमतिया सास री	"
२४.	सुख दुख करमा लार है	"

	मोती	सीपी
५१.	समद सूख सूरज वुझें	सतरैं
५२.	सवद सूर कायर सवद	अठारैं
५३.	सवद वाँध दै जीव नैं	"
५४.	नित घोचो करतो रवू	"
५५.	काल् कनोई, गगन री	उगणीस
५६.	वूद समद री मावड़ी	"
५७.	मन करसो हल् जीभड़ी	"
५८.	वोणैं पंली दीठ कर	वीस
५९.	जको निरजण कद करै	"
६०	रच्या न सुख दुख वो जको	"
६१.	काला धोला वादला	इक्कीस
६२.	अकथ साच नैं कथ सकैं	"
६३.	रतन साथ ले ज्याण नैं	"
६४.	नहीं सकैं दिवलो भुला	वाईस
६५.	कद इंचछ्यो तू जलम नैं	"
६६.	फिरै फिरकली जद हुवैं	"
६७	वांस हुवैं डीघा घणां	तेईस
६८.	काम हुवैं थारैं करचो	"
६९.	आंधो धुंऊं विकार रो	"
७०.	देस, काल् नैं देख पण	चौईस
७१.	वैठो काल् विसायती	"
७२.	काल व्याध तंवू गगन	"
७३.	काज वीज चातर चुगैं	पचीस
७४.	आंधी आई जद गया	"
७५.	जको रवैं निज भाव मे	"
७६.	काल्वेलियैं वगत री	छाईस

	मोती		मोपी

	मोती	सीपी
१५५.	मसि गारो भाठा सबद	बावन
१५६	बीज एक है पण उग्या	,,
१५७.	घाव दियो वैरी करै ..	तरेपन
१५८	पड्यो कुभ रै गुण गलै	,,
१५९.	बिन्यां बीज निपजै इस्या	,,
१६०	दिन किण नै गोरो करै	चौपन
१६१.	जका अजोगा मिनख बै	,,
१६२.	जियां भिदयां अणु रै हुवै	,,
१६३.	सोधै सिस्टी मूल नै	पचपन
१६४.	करम बंध्या कद जीव रै	,,
१६५.	सिस्टी नै बिंबित करै	,,
१६६.	आडी रसना रै करी	छप्पन
१६७.	काढ फूल रै जीव नै	,,
१६८	बड काजल री कोटडी	,,
१६९.	सबद अबै कर दै खमा	सतावन
१७०	उच्छब रै रमझोल मे	,,
१७१.	छयां न इंन्छै रूख पण	,,
१७२.	मिलसी जड़ नै अरथ जद	अठावन
१७३	जीव नाव ठाकर बडो	,,
१७४	सबद तू तड़ा बो'र क्यूं	,,
१७५	रीतो दिवलो सबद रो	गुणसठ
१७६	झूठो साचो के हुवै	,,
१७७	जल स्यू धरती नीसरी	,,
१७८	संसारी सम्बन्ध है	साठ
१७९.	बाजी सावण डोकरी	,,
१८०.	एक एक तिण चुग चिडी	,,

मोती		सीपी
२३३.	उडै पंखेरू मोकला	अठंतर
२३४.	मोती मिणसी बो हुवै	,,
२३५.	देतो मत फिर ओलमो	उन्यासी
२३६.	खेल मती लुकमींचणी	,,
२३७.	बोल्यो जका न ग्यान नै	,,
२३८.	रवै फूल मे पाखड़्यां	अस्सी
२३९.	माया मिनखां स्यूं वड़ी	,,
२४०.	गांव भलो समझै तनै	,,
२४१.	घाव एक सा पण फरक	इक्यासी
२४२.	मती कलपना कर करी	,,
२४३.	म्हे ढोवां पग कद कवै	,,
२४४.	संख, सीपट्यां दै वगा	वयांसी
२४५.	के लेणो के बेचणो	,,
२४६.	लेता सौदो हर जठै	,,
२४७.	आ'र पड़्यो माथै वजर	तयासी
२४८.	तुलता मोती ताकड़्यां	,,
२४९.	सिस्टी स्यूं दिस्टी वड़ी	,,
२५०.	फिरै पोवणां स्यापड़ा	चौरासी
२५१.	धरम आचरण स्यूं सधै	,,
२५२.	समधरमी है हिम-अगन	,,
२५३.	गगन एक कोनी, अलग	पिचासी
२५४.	चांदी स्यूं चंदो घड़्यो	,,
२५५.	सुई नहीं कीं काम री	,,
२५६.	वंधसी वो ही आंक मे	छियासी
२५७.	मोटी छांटां ओसरयो	,,
२५८.	खोटी मत चिन्ती हुवै	,,

१

हुवै न सत् री परंपरा
सत अंतस रो बोध,
पीढी चालै असत री
तत नै समझ अबोध !

२

रयो हुवै निज रो धणी
क्यां नै परण्यो पीव ?
नींद बेच क्यूं ओभको
लीन्यो भोला जीव ?

३

भेख धरयां टोलै रह्यां
नाक घलैली नाथ,
चावै जै सारथ तो
वण कर रही अनाथ,

४

दीठ हुयां सत भाससी
निरथक भेख डफाण,
आंधै नै कोनी दिसै
धरचो हथेली भाण!

५

नहीं भेख में दीठ मे
संतपणै रो वास,
विन्यां हुयां समदीठ सो
कात्यो पिन्यो कपास!

६

थित गत रो समतोल है
ओ दिखतो संसार,
हूंतां पाण अतोल के
खिंडतां लागै वार?

७

मोटो समझै आप नै
जे तू धन रै पाण ।
थारो चेतण बापडो
जड़ता लार पिछाण,

८

घड़ी समझ जिण नै कसी
पूचै पर मोटयार,
सजड़ हथकड़ी काल री
कैदी बण्यो लगा' र ।

९

कुदरत पालै बीज नै
फल़ रो चोढै खोल़,
मिनख खोल़ नै मोल लै
फैंकै तत अनमोल,

१०

सबद चलू कोनी सकै
असबद समद अलूंच,
कागद रो घट भर थकी
कलम चिड़ी री चूंच,

११

स्याही, कागद, कलम जड़
आखर है निष्प्राण,
सबद जलमसी जद हुसी
संवेदनमय प्राण,

१२

जकी चेतणां जीव मे
बीं री कोनी आद,
मुगत हू'र परमाद स्यूं
कर अणभूत अनाद,

१३

पड़सी पाछो खेत मे
ज्यासी किस्यो पिसीज ?
सकै जाण इण लिखत नैं
न करसो न बीज !

१४

काळै माळां री रयण
दिन रा धवळा केस,
जद घर आवै कामणी
धणी जाय परदेस !

१५

सूरज कद आथै उगै
न्यारी न्यारी ठौड ?
ओ तो मन रो देत है
किंयां नैण दै छोड !

१६

वरस्यो धारोधार पण
लियो वेकल्ू धोस,
ओऴा भांज्या ठोकरां
जद जऴ हुयो सदोष,

१७

काल नहीं टूटै जको
टूटै वा है दीठ,
काला धोऴा रात दिन
नैण विहग री बींठ,

१८

तिरवाऴो घी तैल रो
दोन्यूं एक समान,
नहीं आंख पण नाक स्यूं
वां रो हुवै निदान,

१६

जका सूर रै वंस रा
सकसी झेल उजास,
चमचेड़ां ऊंदी लटक
तम में करसी वास,

२०

जाऊ जाऊ मन करै
जाणो अजल़ धीन,
जास्यू जिण खिण अणखसी
जामण मनै जमीन,

२१

चिणियो आगल नींव पर
ओ दस खडो मै'ल,
सूतो तू क्यू जीवडा
मांय हुयोड़ो पैल ?

२२

खुली छोड मत आंख नैं
रुलती फिरसी दीठ,
जड़ तू पलक किंवाड़िया
सुरत बावड़ी नीठ,

२३

रमै रमतिया साँस री
पण अणदीठी डोर,
रमत खिंडै जद ठा पड़ै
रमतो कोई और!

२४

सुख दुख करमां लार है
मन निरवाळो राख,
रसना स्यूं गुड़ लूण नैं
समभावी बण चाख,

२५

घाट घाट भमतो फिर्‌यो
रीतो घड़लो लें'र,
थाक्यो जद निज बावड़ी
चेतै आई फेर,

२६

राखी मन री म्यान मे
तिसणा री तरवार,
जे कर दी नागी वड़ै
बावणियै नै मार,

२७

खिरै जकै मे ही रवै
बो है जको असेस,
किरिया हुवै विसेस पण
कारण है अविसेस,

२८

जड़ चेतण री उमर वण
हूण लागज्या लार,
काल् वापड़ो के करै
विना उमर गिगनार !

२९

तन नै मोडो कर ठगी
तू मत निज नै जीव,
मन मोढो कर खोलसी
ढ़कियो मोड़ो पीव,

३०

संत सवद सिव नैण है
छूट दाभ दै काम,
घणख वाय रै रोग री
ओखध ताती डाम,

३१

सुवरण सुवरण ही रवै
नहीं कटीजै अंग,
खोट हुवै जिण दरव मे
रंग हुसी बदरंग,

३२

अणु स्यू करै कुबेरणी
मन मे वण करतार,
लागै आयो भायखो
लोप हुसी ससार,

३३

जीव पावणो तू अठै
क्या रो करै धिणाप?
मारग री खरची हुसी
थारा ही पुन पाप,

३४

कलम तीर मन बावरी
सवद हिरण रै लार,
भाजै बिल स्यूं निकळसी
काळ सरप फुंकार,

३५

तू भोळा वन में गयो
घर में मन नै मे'ल,
वन वणग्यो घर जीवड़ा
जबर करी असकेल !

३६

निरथक पूजा सेवना
कांई फूंकै संख ?
खिण खिण मन रै गगन मे
उडै वासना खंख,

३७

चावै हूणो भय मुगत
मत फिर दूजां लार,
जा तू थारी सरण मे
असरण ओ संसार,

३८

आम नीम नेडा उग्या
निज निज रा गुण दोष,
आल़ नहीं देवै इस्यो
मिलै कठै पाडोस ?

३९

गगन थाल़ पुरस्यो समद
वादल़ खीच सिझा'र,
भाण घिलोड़ी पून दी
उधा भरै घी धार,

४०

दिन रो धोलो हांसलो
कोयल काली रात
गगन पींजरो काल ले
फिरै न आवै हाथ !

४१

बंधग्यो भोला बगत स्यूं
सधसी कियां अकाल ?
चाकर नै ठाकर करयो
इण रा हेला झाल,

४२

गगन पून घर मे वसै
नित उठ आवै भाण,
लूंठां लारै क्यूं फिरै
फेर हुयोड़ो ढ़ाण ?

४३

तू जाण्यो पण कद करी
वो थारै स्यू जाण ?
दोन्यां कानी स्यूं हुवै
वीं रो नांव पिछाण,

४४

लियो नहीं जावै मतै
आवै वो सन्यास,
ओ तो मन रो भाव ज्यू
घड़ै मांय आकास,

४५

फिरै भाखतो परवचन
सुणै न निज रा कान,
भाखै जिण नै आचरै
वीं रा वचन प्रमाण,

४६

कर निनाण तिसणा नसै
हुवै साव निरबीज,
जणां रूंख संतोस रो
फळ देसी गदरीज,

४७

नहीं सबद बोलै भंवूं
गूंगै भवूं न बोल,
नैण नहीं वीं रै भंवूं
के हीरो अनमोल!

४८

कोजो कादो राग रो
पग पग तिसळै जीव,
छाई नाख अराग री
मिलसी सूख्या सींव,

४९

जद जद मैं मांदो हुयो
करचो सवद नै चीत,
हणवत वण संजीवणी
ल्यायो पाळी प्रीत,

५०

उमर ढळी अणचेत मे
वुझी नैण री दीठ,
पण लौ जागी सवद री,
दिखग्यो मनै अदीठ,

५१

समद सूख सूरज वुझै
डिगै हिमालो धूज,
परलै पंली पून थम
मरसी जीव अमूझ,

५२

सवद सूर कायर सवद
सवद मूढ, मतिमान,
सवद भेद अभेद है
सवद भगत भगवान,

५३

सवद बांध दें जीव नै
सवद खोल दै फन्द,
विष अमरित साधैं जियां
सवद इस्यो है छंद,

५४

नित घोचो करतो रवूं
पर है सवद उदार,
निज रै माथै पर धरै
म्हारो भार उतार,

५५

काल़ कनोई, गगन री
भट्टी, ईंधण भाण,
रात कडाह़ी मे तलै
तारां रा पकवान,

५६

बूंद समद री मावडी
बाप वडो गिगनार,
सुसरो हिमगिरि घण धरा
नदया दायजो लार,

५७

मन करसो, हल़ जीभडी
खेत कान उणियार,
खारा मीठा फल़ हुवै
वचन वीज रै लार,

५८

वोणै पंलो दीठ कर
बीज कोरड़ू टाल,
पछै रेत री कूख नैं
देतो फिरसी आल,

५९

जको निरजण कद करै
सिरजण री वेगार?
सिरजण करसी वो हुवै
जिण नैं कीं दरकार?

६०

रच्या न सुख दुख वो जको
प्रभु सत चित आनन्द,
जता डुंद वै जीव रै
निज करमां रा फन्द,

६१

काळा धोळा बादळा
ढकै जिया गिगनार,
बंधै ईंयां पुन पाप स्यूं
आतम तत अविकार,

६२

अकथ साच नै कथ सकै
रळा सबद री झूठ,
वाईजै तरवार कद
बिन्या लगाया मूठ ?

६३

रतन साथ ले ज्याण नै
मेल्या बुगचो बाध,
ओ ही समज्या तो घणो
कयो देणिया काध,

६४

नहीं सकै दिवलो भुला
तम थारो उपगार,
थारै कारण नेह दै
मतलवियो संसार,

६५

कद इंच्छ्यो तू जलम नैं
इंच्छै कद तू मौत?
तू परवस गलवाद कर
मत कर चोड़ै पोत,

६६

फिरै फिरकली जद हुवै
चिमठी मे कीं साच,
झूठ नहीं गत दे सकै,
लै तू परतख जांच,

६७

वास हुवै डीघा घणां
पण थोथा के सार ?
तुलसी हुवै विलाग री
मादा रो उपचार,

६८

काम हुवै थारै करद्यो
ओ है कूड़ विचार,
कता अलख सागै जुड़ै
जणा पड़ै वो पार,

६९

आघो धुंऊ विकार रो
दीठ ज्यायली चूक,
चेता बुझती चेतणा
दै विवेक री फूंक,

७०

देस, काल़ नै देख पण
आ लै निसचै जाण,
सत रै मारग जा सकै
नहीं असत रै पाण,

७१

बैठो काल़ बिसायती
जीव रमतिया ले'र,
पेई मे धरती पड़्यां
सिड्या, ढ़कणो दे'र,

७२

काल़ व्याध तंवू गगन
गाड्या धरती खूंट,
कुतिया दो दिन रात रा
जीव सकै कद छूट ?

७३

काज बीज चातर चुगै
दै कचरै नै टाल़,
हिचकै काढण वासतै
मूढ वाल़ री खाल,

७४

आधी आई जद गया
रावलि़या रल़कीज,
विपद पड़्या रहणी कठण
मेल़प, धीज पतीज,

७५

जको रवै निज भाव मे
वो ही सहज समाव,
थित प्रग नर जाणै नहीं
काई हुवै अभाव ?

७६

काल़वेलियं बगत री
पूंगी सो ओ भाण,
निकल़ं अंवर विवर स्यूं
तम फणधर सुण तान,

७७

गुण गिणती में आ सकै
ओगण गिण्या न जाय,
कुण तिराक खारो समद
तिरणै सकै वताय ?

७८

फुलड़ा आक गुलाव रा
मोमाखी रस ले'र,
मधु सिरजै तू रच विंया
रचना निज पुट दे'र,

७६

पोथ्यां पढ़ पण तू मती
लेई अकल उधार,
पुसट करी बीं खाद स्यूं
निज रा बीज-विचार,

८०

रचणा वा जिण मे दिखै
सिरजणियै री दीठ,
नहीं'स बोझो सबद रो
लद मत कागद पीठ,

८१

पगां पड़ै गेला हुवै
जे मजिल रो ग्यान,
नहीं'स मारग बापड़ा
सूरदास रा बाण,

८२

मजल वता पँली मनैं
जद देस्यूं मैं दीठ,
मजल नहीं कोई जणां
तू अवधूत वसीठ,

८३

आलै बैठी चिड़कली
दीठ गई गिगनार,
निरविकार दीख्यो जणां
उडगी पांख पसार,

८४

नभ माचो दिन सोड़ियो
कामळ काळी रात,
सोणै रो मिस कर करै
काळ जीव री घात,

८५

दीठ पांगली जा परी
जठै दिखै भख-भोग,
वणसी थिर आ अचपली
जे मन साधै जोग,

८६

ल्यायो लाडी मन मरद
नखराली बुध नार,
जाया सुख दुख सुत इस्या
नित री गोधम त्यार,

८७

भाण सिलगती थेपडी
खिडगी बुझती वार,
राख रात ऊपर पड्या
नखत सजल अगार,

८८

भाण मिरकली घीव सो
दिन आटै री खीर,
भर्‌यो गगन रो वाटको
काल् निवेड़ै पी'र,

८९

पग धरती, सूंडी अनल
नाक पून, चख नीर,
मन अम्बर, तत पांच री
टपरी नांव सरीर,

९०

सत अरजण रो विसरजण
मा रै दूध समान,
दान नही वो विष वमन
अरजित कुकरम पाण,

९१

बैठी वाई साच है
कोड़ी री सी चाल,
झूठ ऊठ सा डग भरै
पूगण मे के ताल ?

९२

ससतर वणग्या सासतर
सवद दुद रो वीज,
जड स्यूं बंधगी चेतणा
मिनख गयो भरमीज,

९३

सूरज कद आंथै उगै
भरमीज्योड़ा नैण,
इकलंग तापै गगन मे
वाँ री छाया रैण,

९४

मन राजा इनरयां प्रजा
राखै धणी धिणाप
घणी सतायां बापड़यां
देसी उत्तर धाप,

९५

लफ भर बोई बीज मत
सागै एकण ठौड़,
वा भेलप के काम री
जुड़ ज्या जिण स्यूं गोड?

९६

चिणगारी सोनै जिसी
अगन-पुरष रो बीज,
परस हुयो बाती गई
भोल़ै मे गरमीज,

९७

सांस जठै पूगै वठै
मतै पुसब री गंध,
के हूतो हूंती इंयां
सूल् चुभन निरबन्ध ?

९८

वधण कंवल् फूल रो
सबै न बीं री गंध,
इच्छया आ हर जीव री
रह्ह सदा निरबन्ध,

९९

अणसमतो मत तेवड़ी
सामी समतो काम,
दिवलो राखी रात नै
नान्ही लौ पर थाम,

१००

अणगिण रै नेड़ो गयो
मैं गिणती रै पाण,
अत मिलायो अणत स्यूं
गिणती रो अैसाण,

१०१

विपद पड़्यां सागै रवै
इस्या कठै है सैण?
सिझ्यां पड़ता मींचसी
पंथी मारग नैण,

१०२

आंख अंधेरै स्यूं मिला
मत सूरज नै देख,
नागै सत रै तेज नै
सहणो कठण चनेक,

१०३

हर सिरजण रै मूल़ मे
वैठी मोटी पीड़,
गीत वणै जद काल़जै
मोटो उठै हवीड़,

१०४

दीसै देतो हाथ स्यूं
लेतो कोई हाथ,
किण रा देणा पावणा
आ जाणै जगनाथ ?

१०५

जतै भागसी राम री
दीठ कनक म्रग लार,
रावण हरसी जानकी
लाघ लिछमणी कार,

१०६

कोड़ी कण, मण रो करै
हाथी आप जुगाड़,
मंगतो वण मोटा मिनख
मती माजनो पाड,

१०७

इंछै कोनी कीं जको
दान भूलज्या दे'र,
इस्यै मिनख रै सामनै
मंगतो साव कुबेर,

१०८

हीरां रा खाजा करचा
गज मोत्यां री खीर,
सूखो टुकड़ो चांवतो
भूखो गयो फकीर,

१०९

फिरै मांगतो भूंगड़ा
ओढ्यां रेसम शाल,
समझो तू अवधूत वो
बोलो वचन संभाल,

११०

दीवट पर दिवलो चसै
वारै गयो उजास,
इयां सुजस, सौरम, कुजस
घर मे करै न वास,

१११

मोसै मिणियो साच रो
पोवै साव अलूण,
कीड़ीनगरै नै जका
पालै लेज्या चून,

११२

माटी मा नारायणी
माटी बिरम महेश,
माटी रिध सिध गोरजा
माटी देव गणेश,

११३

जलमै शतपद कंसलो
हाथी रै पग च्यार,
सरप अपग संसार री
लीला रो के पार?

११४

अमी सरीसी मसि सरस
कलम मती नस नाख,
असबद नेड़ो सबद री
जोत जींवती राख,

११५

गावै जिण रै गीत नै
अणपढ कंठां धार,
काळजयी वो कलम स्यूं
दियो काल नै मार,

११६

हूंता खोड़ा हिरणियां
सुणतां पाण दकाल,
वा रो मिणियो मोसग्यो
दिन वोपारां काळ,

११७

नींद मुंदयै नैणां दिखै
ज्यूं मन रा जंजाळ,
भासै अतर दीठ नै
भव रा तीन्यूं काळ,

११८

खिण रै लारै खिण गई
खिण आगै खिण फेर,
गई जकी नै भूलज्या
आवै जकी अंवेर,

११९

नैण मुंडागै पंथ वो
चाल्यां लखसी पीठ,
दीठ पीठ दोन्यूं दिख्यां
मिलसी मन रो ईठ,

१२०

कर लै छीणी नै कलम
उन्डा सबद उकेर,
निमलो लिखत मुजाणसी
काल आंगली फेर,

१२१

एक वेजको जे हुवै
कपड़ो वाजै पूर,
पण आभै रा छेकला
वण्या चनरमा सूर,

१२२

पूग गाँव रै गोरवै
गेलो देई छोड,
वीं गेलै वगतो रया
कोनी पूगै ठोड,

१२३

पणिहारी, पाणी, घडो
मिलग्यो सगलो मेल,
फकत इंडुणी रै विन्या
खिडियो मंडियो खेल,

इगनातीत

१२४

मुगता चुगतां हंस नैं
किण दिन देख्यो दीठ ?
विरथ तरक, कंवत हुवैं
निज मे आप अदीठ,

१२५

पोल ढकीजं बावला
कद ढकियां स्यूं पोल ?
नहीं खोलसी पोल जे
खुलसी थारी पोल,

१२६

कता दरब के गुण धरम
मन री जाण पिछाण,
पुतली रैं परदै परा
कांटां फूल समान,

१२७

इंनछ्या री मछली चपल
गुदलावै मन नीर,
देख दापलं दीठ रो
बुगलो बैठ्यो तीर,

१२८

तणो मून है रूख रो
पण पत्ता वाचाल,
भाज्या पड़ पतझड निरख
लागी कती'क ताल ?

१२९

गिण मत उण रा गासिया
जिण नैं ल्याचो नूत,
आडै हाथा पुरस जे
चावै थारी कूत,

तयानीम

१३०

दौरी विरती छूटणी
वदल् सकै है रूप,
तिरचो कनक रो समद पण
पड़्यो सवद रै कूप,

१३१

दुरगम मोटै भाखरां
वसै एकलो ना'र,
रवै एक विल ऊंदरा
डरता टोल् वणा'र,

१३२

भाण कनै कुण जा सकै
धधकै अगन अपार,
लियाँ हथेली सांपड़त
सत रै वल् गिगनार,

१३३

फल् इसडा जिण नै चखै
कदेन वां रा वीज !
अनासगत वण तू इस्यो
परतख देख पतीज,

१३४

दीठ थकी वा समझगी
निरथक जाण पिछाण,
पण तिसणां कद लेण दै
पलका नै औसाण ?

१३५

लिख्या न मैं खाता वही
करया न बाकी जोड,
चाल्योडो गेलो कलम
म्हारी चाली छोड,

१३६

उड्यो वायरै साथ तिण
सागो समझ अबूझ,
पड्यो अगन में पून नै
लेतो पैली बूझ,

१३७

गैरो जा चावै हुवै
पींदै स्यू साख्यात,
निज मे देसी जल धुआ
कादै भरिया हाथ,

१३८

फिरा आंगली परख तू
किसी'क तीखी धार ?
हुवै सुहागण रगत रै
छांटां स्यूं तरवार,

१३६

देख काच मे मोलियो
बाधै पेच सुंवार,
टीकण आई खिण गई
हूती देख उवार,

१४०

दीठ गई पण नैण रो
खोखो सावत हाल,
उड्यो पंखेरु पण रयो
आलो तरवर डाल,

१४१

मोटा घणा मतीरिया
जावक माडी वेल,
चिप जामण स्यू बापडी
सकी कूख नै झेल,

१४२

हर कोई नै पुरस मत
मती करी मनवार,
अपच हुया वणसी गरल़
अमरित गरिठ विचार,

१४३

सुजा मती सिर सवद रो
जता अणूतो लाड,
चेतण ओ वणज्या नहीं
चेत गल़ै रो हाड,

१४४

चढा कसौटी पर मती
ज्यासी सुवरण छीज,
इंयां अंतस्याणो कृपण
गाहक गयो ठगीज,

१४५

घड़ो, कूंजीयो, माटकी
माटी रा आकार,
दीसै उंडी दीठ नै
माटी आप कुमार,

१४६

जावक काचा सूत जद
सागै गया वटीज,
मारकणो गोघो गयो
वा स्यूं ही नाथीज,

१४७

वादल़ छंटग्या पण कठै
जावै ओ गिगनार ?
फीं कोनी वीं रो सकै
कुण सावट विसतार ?

१४८

छोटी पोटी सबद री
किया समावै साच ?
दीसै रूप, अरूप नै
दिखा सकै कद काच ?

१४९

अंतर तप लाग्यां बिन्यां
काचो भांडो ग्यान,
चिनीक तिसणा कांकरी
देवै खिडा मंडाण,

१५०

माळी गोरो चनरमा
सींची बाड़ी रात,
नखत पुसब कुचल्या खुरां
वड़ गोधो परभात,

१५१

खिण खिण मे घट वद हुवै
वदलै भाव विचार,
कीड़ी सी खिण स्यू वध्यो
भव-गज वली अपार,

१५२

दूहो वड़ रै वीज ज्यू
राई रै आकार,
वोवै अतर दीठ मे
उग पूगै गिगनार,

१५३

व्याल सहसफण वापडो
नारायण री सेज,
काल डसै जिण मे हुवै
रस इनरघा रा वेज,

१५४

वीज अदेवल़ खा सकै
उग्यां जिनावर लार,
मन स्यूं कर सा कल़पना
मत पुरषारथ हार,

१५५

मसि गारो भाठा सबद
कागद धरती मान,
उठा कलम-करणी चिण्यो
कविता रो अस्थान,

१५६

वीज एक है पण उग्या
ज्यासी पड़ फंटवाड़,
आ चिंता कर वीज रो
मत तू भविस विगाड़,

१५७

घाव दियो वैरी करै
पाछो वगत भराव,
कवै वगत नै निरदई
नुगरो मिनख सभाव,

१५८

पड़्यो कुभ रै गुण गलै
जणा पतीजी भूण,
ग्यान-नीर ल्या कर सकै
तिरपत जीवा-जूण,

१५९

विन्या वीज निपजै इस्या
केई है फल् फूल,
गरभ वास स्यू टाल दै
वा नै अमरित मूल,

१६०

दिन किण नै गोरो करै
किण नै काळो रात ?
धौळा काळा करम है
जका मिनख रै हाथ,

१६१

जका अजोगा मिनख वै
दै हूणी नै आळ,
निज रै अकरम वासतै
आ ही लाधै ढाल,

१६२

जियां भिदयां अणु रै हुवै
वारै घोर निनाद,
वियां चेतणा भिद जगै
अंतर अनहद नाद,

१६३

सोधै सिस्टी मूळ नै
जको साव निरमूळ,
कोनी लाधै बीज तू
कांदो छोल समूळ !

१६४

करम बंध्या कद जीव रै
तरक उठावै वात,
सहज पड़तर कनक रै
जद स्यूं माटी साथ,

१६५

सिस्टी नै विंवित करै
मन रो काच विचार,
निरविचार जे मन हुवै
भासै कद ससार ?

१६६

आडी रसना रै करी
दांत होठ री पाल़,
जे उलांघ वारै हुवै
बोली वचन संभाल़,

१६७

काढ फूल रै जीव नै
अंतर दीन्यो नाम,
अंतरजामी कद खमै
देखै आठों याम ?

१६८

वड़ काजल़ री कोटड़ी
रयो जको अणदाग,
नर देही मे सांपड़त
जलम्यो आप विराग,

१६९

सवद अवै कर दै खिमा
जा तू थारी ठौर,
थारै अणहद हेत स्यू
मैं पीडीजूं ओर,

१७०

उच्छत्र रै रमझोल मे
टूट्यो मुगता हार,
मुगत हू'र नाचो मिण्यां
सुवै राजदरवार,

१७१

छ्यां न इन्छै रूख पण
सूरज रो संजोग,
इया वंध्यो सुभ करम रै
लारै पुन रो जोग,

१७२

मिलसी जड़ नै अरथ जद
जुड़सी चेतण सांस,
वण्यो किसन री वंसरी
निरथक थोथो वांस,

१७३

जीव नांव ठाकर वडो
देह दुरग में वास,
चाकर पांच रुलेड़मन
मरजीदान खवास,

१७४

सवद तूंतड़ा वो'र क्यूं
रूंधै कागद खेत?
अै जावक निरजीव है
आं नै गिटसी रेत,

१७५

रीतो दिवलो सवद रो
नहीं भाव रो नेह,
विन्यां दीठ-तूल़ी कियां
जगमग करसी गेह ?

१७६

झूठो साचो के हुवै
धरम धरम हैं मूढ,
नहीं विसेसण सुणन मे
आयो साची झूठ,

१७७

जल़ स्यूं धरती नीसरी
अनल़ परगट्यो नीर,
नारायण रो सासरो
जल लिछमी रो पी'र,

१७८

संसारी समबन्ध है
झीणां पून समान,
बणै किराणो केवट्यां
नहीं'स कचरै मान,

१७९

वाजी सावण डोकरी
कियां जलमतां पाण?
खिण मे बचपन जोबनो
जरा भोग ली लाण,

१८०

एक एक तिण चुग चिड़ी
लीन्यो आलो घाल,
वा छोटी पण नित बड़ी
लागी कती'क ताल?

१८१

कच्चाई कोनी मिटी
मत कर घड़ा गुमान,
किसी ठेस के ठा करै
तनै ठीकरै मान ?

१८२

झोटा लेवै नींद रा
थोड़ी ताल् विलो'र,
काढयो चावै चूंटियो
दै झोटा संजोर !

१८३

चिंतण रो गैरो कुओ
लियो अल्ूच कबीर,
'सतवाणी' स्यूं खोल दी
फेर रुड़्योडी सीर,

१८४

निरजण रोही एकली
वंठी गई अमूंझ,
करी कमेड़ी गटर गूं
आभै पूगी गूंज,

१८५

कर विवेक रो छायलो
मन रा फटक विचार,
उड़सी निरथक तूंतड़ा
रहसी दाणां लार,

१८६

नहीं राम रै नाव स्यूं
कम रावण रो नांव,
रामपुरा केई नहीं
पण रावणपुर गांव,

१८७

रावण रै दस सीस हा
आ कोरी गलवाद,
कुवधी रो परयाय वण
गयो लोक परवाद,

१८८

पलक फरूकं पलक मे
के ठा कती'क वार?
मूगी सांसां कुण गिणं
गिणं टका ससार,

१८९

वड़वानल़ धधकं समद
दावानल़ कातार,
रागानल़ सिलगं वल़ं
ओ आखो संसार,

१९०

उगै न हीरा कांकरा
उगसी बो ही बीज,
लख माटी री पीड़ नैं
ज्यासी जको पसीज,

१९१

रतन जड़ाया मुगट मे
चुग चुग घणां अमोल,
जड़ियो लो बुध-मिण चुरा
चूकी दीठ डफोल,

१९२

काम भूख री दीठ स्यूं
मिनख डांगरो एक,
पण पिसतावै मिनख जद
जागै हियै विवेक,

१९३

मत मोल्योड़ै ग्यान रै
हियो अडाणै राख,
थारी वुध री मिण ढकै
क्यूं तू गोवर नाख,

१९४

दूज चांद वरतै जिस्यो
पाटी काळी रात,
वारखडी तारा वगत
लिखै भुजाणै प्रात,

१९५

कियां ल्या'र मूरत घड़ी
इस्यो वजर पाषाण?
इण रो हियो पसीजसी
कद दुख जग रो जाण?

१९६

पंली मींची किड़किड़्यां
पछै मींचली जाड़,
मैं समझ्यो ओ कांकरो
लाग्यो पछै पहाड़,

१९७

आंक घटा दै आंक नै
आंक आंक नै जोड़,
कोनी कीं घट वद हुवै
रंसी आखर ठौड,

१९८

कोनी सत रो सवद स्यूं
समधरमी समबन्ध,
सत री भासा मून है
जियां फूल री गंध,

१९९

तू सवदां री भीड़ कर
जग्यां न राखी सेस,
कोरो कागद भाखतो
थारो गूढ सनेस,

२००

गई महक उठ गगन मे
छमक्यो जणां बघार,
करम चीकणां खय हुयां
खुल्यो मुगत रो द्वार,

२०१

अगम नहीं भव रो समद
पण लै पैली जाण,
नाख पोटली दरब री
तिरसी तूंवा पाण,

२०२

बगत नहीं थारै वळू
कर लै नीची नाड़,
बगत फिर्‌यां बण कांकरो
पगां पड़ैलो पा'ड़,

२०३

लोक लाज स्यूं डर मिनख
करै नहीं जे पाप,
पराधीन बै बापड़ा
ज्यूं कील्योड़ा स्याप,

२०४

तू अनन्त रै वासतै
भोळ्या जाप करोड़,
अणगिण स्यूं मिलणो हुवै
मिणियां गिणना छोड,

२०५

मत परकरमा कर विरथ
बैठो रह इण ठौड,
दीठ राख मिलसी तनै
बो कोनी रूं तोड़ !

२०६

आगै लारै चालसी
पग दोन्यू ओ नेम,
करयां ईसको गत कठै
फेर कुसल के खेम ?

२०७

मैं'ल झूंपड़ी है जिस्या
विस्यो सहज वनवास,
देह नहीं पर दीठ मे
थित प्रग करै निवास,

२०८

जता जीव सैं रा अलग
करमां सारू डुंद,
निज री कूंची स्यूं खुलै
अंतर तालो वन्द,

२०९

रस नै कर नीरस लगा
आतम तप री आंच,
इंयां ग्यान गाढो हुयां
बरत पलै ला पांच,

२१०

छोडै सोरै सांस कद
लाग्यो तिसणां भूत ?
कर ठुकंतरी सांतरी
काढ ग्यान रो जूत,

२११

मन रै लारै जीव क्यूं
खांतो फिरै भचीड़?
चावै मिलणो साच स्यूं
काढ आंख स्यूं भीड़,

२१२

कठै कठै कोनी गयो
ओ सरभंगी जीव?
नरग सरग भमतो फिरै
करमा वंध्यो कुजीव,

२१३

एक वुझाई सिलगगी
दूजी तिसणा ओर,
राख हुसी जद वरससी
अनुकपा रा लोर,

२१४

मूढ़ किस्या दरसण हुवै
फिरयां देवरा धाम ?
दरसण कर निज रा हुवै
ओ मनड़ो निष्काम,

२१५

बंधण मोटो राग रो
ज्यावै गज वल़ थाक,
तिसणां त्याग्यां ओ झरै
जियां खिरै फल़ पाक,

२१६

जावक सुरड़ी निसरगी
दी क्यू सित्या नाख,
चुरा कांकरो दी गमा
हीरां वरगी साख,

२१७

घाणी रो नारो वण्यो
सवद घाल ली नाथ,
मुगत हुसी जद चेतणा
असवद आसी हाथ,

२१८

उठा दीठ देखूं जठै
वठै रतन भंडार,
के छोडूं लेऊँ हुई
दोगा चिंती लार ?

२१९

सहज उगै वणज्या फसल
तुरत झूठ रा बीज,
उगै न हीरो साच रो
चावै अमरित सींच,

२२०

सिंभ्या जका विछावणां
दिन उगियां बै पूर,
सरव जिकारा गरज रा
गोगो वाजै घूल,

२२१

परम पुरुष सर्वग्य श्री
रामचन्द्र भगवंत,
सोधण सीता नै गयो
पण वानर हणवंत,

२२२

डूंगर माथै हिम चढ्यो
निज नै मान विसेख,
तालामेली लागगी
सूरज सामो देख,

२२३

घटै नहीं कोई अघट
भिड़्या ठोठ स्यूं ठोठ,
कद खागी एरण हुवै
खायां घण री चोट ?

२२४

करड़ावण कोनी सवै
कनक जको सौ टंच,
जे चाहीजै हार तो
रळा मांय परपंच,

२२५

राम कर्यो संसै दियो
घण नै झूठो आळ,
हुई भसम निज मे अगन
सत नै दियो उजाळ,

पि

२२६

हल़ स्यूं फाड़ै काल़जो
घालै ऊंडा घाव,
खिमावान धरती मिनख
पण तू नुगरो साव,

२२७

करै च्यानणो लाय पण
डरपै बीं स्यूं जीव,
लागै गमतो रीत रो
चावै अमरित घीव,

२२८

तू जोड़्यो प्रभु स्यूं हियो
चिनीक रंगी फांक,
पूरो बैठा जोड़ नै
पाछो साबल़ चांक,

२२९

मोडो आवै रोज तू
कवै मोड़ो खोल,
जाण बूझ मे फेंक दी
चावी वंठ टंटोल,

२३०

कार्घं कामल़ जेठ में
तनै सियाल़ो चीत,
कियां भूलग्यो मरण नै
मनड़ा म्हारा मीत ?

२३१

नाव जपण रै वासतै
क्यूं छोडयो तू काम ?
जपै जकै श्री राम नै
वो रोप्यो संगराम,

२३२

फूक दियां दिवलो बुझ्यो
वो थारै आधीन,
सूरज कोनी बुझ सकै
जको आप स्वाधीन,

२३३

उडै पंखेरू मोकळा
आवै पाछा चाल,
आभै मे कोनी सकै
कोई आळा घाल,

२३४

मोती मिणसी वो हुवै
जिण री निरमल दीठ,
सुच्छम दीसै कद तनै
डूगर दीखै नीठ,

२३५

देती मत फिर ओल़मो
मत दै झूठी आल़,
कांई नावं के जमा
निज री वही संभाल़,

२३६

खेल मती लुकमींचणी
निज स्यूं भोल़ा जीव,
रयो रमत में जीव तो
जासी आयो पीव,

२३७

बोध्यो जका न ग्यान नै
आ ही देसी सीख,
कांई करसी दीठ रो
पकड़्या वग तू लीक,

२३८

रवै फूल में पांखड़्यां
पण फल एकमएक,
ज्यूं मंजल रै पंथ मे
डगरयां मिलै अनेक,

२३९

माया मिनखां स्यूं बड़ी
माया मायड़ तात,
परम पुरष री वीनणी
माया री के बात ?

२४०

गांव भलो समझै तनै
बात नहीं कीं खास,
पाड़ोसी चोखो कवै
जणां करी विसवास,

२४१

घाव एक सा पण फरक
कर दै छाती पीठ,
कुण कायर कुण सूरमा
वणं कचेड़ी दीठ ?

२४२

मती कल्पना कर करी
तू निरणं आगूंछ,
छूटंली कोनी पछै
जिद नाहर री पूछ,

२४३

म्हे ढोवां पग कद कवै
माथै पर लो भार ?
निज रै करतव नै कणा
मानै पर-उपगार ?

२४४

संख, सीपट्यां दै बगा
समद न राखै पास,
मोती कोनी काढ दै
पर बो सोरै सास,

२४५

के लेणो के वेचणो
कर लै फड़दी त्यार,
रयो गतागम में पज्यो
ज्यासी उठ बाजार,

२४६

लेता सौदो हर जठै
मेल मूंछ रो माल,
मिलै न कोडी सिर सटै
मिनखां सारू काल

२४७

आ'र पड़्यो माथै वजर
तनै समझ इण जोग,
खरो उतर तू परख मे
सम दिस्टी स्यूं भोग,

२४८

तुलता मोती ताकड़्यां
वोरा हीरा लाल,
वां रै फोड़ा चून रा
मन रो मौजी काल,

२४९

सिस्टी स्यूं दिस्टी वड़ी
धरती स्यूं गिगनार,
हुवै मिनख रो के वडो
वीं रो वडो विचार

२५०

फिरै पीवणां स्यापड़ा
भेख मिनख रो धार,
सूतोड़ां रा सांस पी
भाजै फण फटकार,

२५१

धरम आचरण स्यूं सधै
ओ कोनी परचार,
जड़ां अदीठी रूंख री
करै माय परसार,

२५२

समधरमी है हिम-अगन
सागी मूल़ सभाव,
दाझै तरवर आकरो
दोन्यां रो ही ताव,

२५३

गगन एक कोनी अलग
हर अणु रो आकास,
दीठै समद अदैत वो
बूंदा रो सहवास,

२५४

चादी स्यूं चन्दो घडयो
सोनै घड़ियो भाण,
हीरा जड़िया नखत ओ
कुण मोटो धनवान ?

२५५

सुई नहीं कीं काम री
हुवै नहीं जे बेझ,
वड़ै बेझ मे गुण करै
बेझां नै अनबेझ,

२५६

वंधसी बो ही आंक में
ज्यावै जको गिणीज,
आभो के अंकै गया
आंकड़िया अंकीज ?

२५७

मोटी छांटां ओसरचो
काळो वादळ गाज,
पिवजी आया चाणचक
हुई हरी मर लाज,

२५८

खोटी मत चिन्ती हुवै
चितणियै री हाण,
मन रै निरमळ तिरथ नै
क्यां न करै मुसाण ?

२५९

सींची नीर सनेव रो
मती करीजे चूक,
इंया वंर रो आकड़ो
सहजा ज्यासी सूख,

२६०

तू मगती दरपण ऋपण
कोनी दं कीं काढ,
रीझ खीज चावं हुवो
थारा नंण अपाढ,

२६१

दरपण नं अरपण हुवं
सज गोरी सिणगार,
पण दरपण री दीठ मे
जागं नहीं विकार,

२६२

रुत जातां भेला करचा
करसो कामल वीज,
काती में सामी दिखै
वीं नै आखातीज,

२६३

कलम हुई आगै पछै
लारै हुया विचार,
कलम ठमी आखर गया
आतम रै दरवार,

२६४

अणभव वो आवै जको
वगत पड़चां पर काम,
कूंची के कोनी मिलै
जद चाहीजै दाम?

२६५

लोक धरम आतम धरम
अै दोन्यूं छत्तीस,
सावल मारग समझलै
किस्यो बीस उगणीस ?

२६६

जलम मरण रै जाल स्यूं
छूट्यो चावै जीव,
मत तू करी वधोतरी
राखी सजम सींव,

२६७

फिरै भीड़ में सोधतो
तू किण नै मोटयार ?
'मै' गमग्यो सहजा हुयो
थारो बेडो पार,

२६८

तू चाल्यो पग मांड कर
धरती भरसी साख,
इयां नहीं हामल भरै
लै उपाव कर लाख,

२६९

छोलै डोल खराद पर
ठोकै कील लुहार,
दुरगत स्यूं ही गत मिलै
लट्टू सो संसार,

२७०

मकड़ी ज्यूं जालो गुंथै
काढ देह स्यूं तार,
माया ठगणी स्यूं रचै
ओ दिखतो संसार,

२७१

रामधणख रो सतलड़ो
बांध बीज री पाग,
बादल़ आयो बीन बण
बड़ा रेत रा भाग,

२७२

अंध वासना उरवशी
चाह मेनका आप,
ओल़ख विसवामित्र हूं
थारै मन रो पाप,

२७३

सूरज रै तप बल़ चढ्यो
गगन पागल़ो नीर,
तिलक कर्‌यो बिजल़ी समझ
लू ठा इण रै सीर,

२७४

नैंण कोटड़ी मे वसैं
सपनैं भेली साच,
अकन कुंआंरी आण कै
कद निज सत नैं आंच

२७५

सहस धार अमरित झरैं
के आणद रो पार ?
पण विसन्यां नैं लत पड़ी
फिरैं जैंर रैं लार,

२७६

घुमा चकरियो वेग स्यूं
थिर ज्यूं दिखसी चाल,
करैं अथग थितप्रग करम
दीसैं पड्या निढाल,

२७७

वगत वगत री वात है
कुण राजा कुण रंक ?
पड़ी ठोकरा धूल री–
आभै चढगी खंख,

२७८

सावळ सवडी रावड़ी
पाड़ी मती सपीड़,
मत कर घणा सुवादिया
देसी काळ गदीड़,

२७९

थारै घर रै आंगणै
जड़िया रतन हजार,
तनै दीखसी भोळिया
कचरो नाख बुहार,

२८०

दीठ नहीं तो सबद है
कलम चिड़ी री बींठ,
मत कर कालो़ बापरचो
धोलो़ कागद नीठ,

२८१

ऊबो जठै अगूण है
सिरक्यां बो आथूंण,
आगै पाछै पग दियां
भुंवै गगन री भूण,

२८२

गांठ खुल्यां लांबी हुवै
ज्यूं उलझ्योड़ी डोर,
मन री गांठां खोल तू
डीघो वणसी ओर,

२८३

गांव जठै गेला वठै
ढुकसी छेकड़ धाप,
समद नहीं नूंतै नदयां
भाजी आवै आप,

२८४

अगन धधकतो न्यावडो
घट री काची देह,
धिन कुमार रो कालजो
करै न आंचो नेह,

२८५

जीवण फद निज मे मजल
ओ तो मारग जीव,
आसंगा बैठो तकै
इयां न आवै सींव,

२८६

छात गगन भू आंगणो
संजम री सुख सेज
पोढै वो ही राखसी
आतम मणी सहेज ?

२८७

धुकसी लकडी एकली
कोनी पकड़ै आग,
समधरमी सागै हुयां
जागै राग विराग,

२८८

तपै अंधेरै में दियो
निरभै मन नै साध,
असुर होलका गोद में
बैठो ज्यूं परलाद,

२८९

विना पात्र जोगो हुया
निरथक देणो वोध,
सिघण रै पय वासतै
ठाव कनक रो सोध,

२९०

चावै करणी साधना
मत धारीजे भेस,
रह तू सहज अभेद वण
भेद वधावै धैस,

२९१

चिणगारी कोनी सकै
लगा लोह मे आग,
काठ हियै सूती अलस
परस्यां ज्यासी जाग,

२६२

कोनी कीं पल्लै पड़ै
कोई नै आराध,
अकल सरीरां ऊपजै
निज आतम नै साध,

२६३

ध्यान ध्याण रो मंत्र है
घूटी कोनी ध्यान,
ध्यासी वो ही त्यागसी
परिगह नै विष मान,

२६४

पुरषारथ वो ही करम
जीतै जको विकार,
निरवरती आतम धरम
परवरती संसार,

णवें

२९५

गोरख ग्रंथो समझ जे
तू छोडयो संसार?
फेर लगायो पंथ रो
क्या न टंटो लार?

२९६

मोह मुगत मनड़ो हुवै
खिण खिण राखदा जाग,
थित प्रग वण अभ्यास स्यू
मतै विणससी राग,

२९७

वजर मान नारेल रै
हिव मे करुणा नीर,
पोखै आखी जूण नै
संवेदण री सीर,

२९८

निन्दा सुण ज्यावै चिगर
जस गायां पोगीज,
कठपुतलो वो वापड़ो
निज पर नहीं पतीज,

२९९

पोथा ढोयां ग्यान रा
कोनी हुवै उजास,
जे तू चावै च्यानणो
निज रो दिवलो चास,

३००

मत इनरचां नै रोस तू
अै जावक निरदोष,
थारो वैरी अलख मन
वीं रा भींटा कोस,

३०१

भाव भूप री पालकी
ढोवै सवद कहार,
मिल राजा स्यूं मूढ क्यूं
फिरै कहारां लार ?

३०२

डाल् पान मे उलझ मत
जाण्यो चावै भेद,
मूल् पकड़ ज्यासी समझ
सत है एक अभेद,

३०३

मन री वांवी मे पडचा
मिणधर सरप अनेक,
अटकल् स्यूं मिण ले सकै
जिण मे सहज विवेक,

३०४

तप करसी भेली हुसी
उरजा आपो आप,
वर्ण विन्यां उपजोग वा
दुरवासा रो शाप,

३०५

समद मथ्यो जद नीसरचो
अमरित सागै जंर,
जद का जूझै सुर असुर
कोनी निवड़चो वैर,

३०६

जावक काला कोयला
करसी सिलग उजास,
उरजा वणसी वासना
तप री तूली चास,

दो

३०७

नान्ही सी कीडी भरैं
जद वटको चींयीज,
दावी मती विचार नैं
डस लैं लो पीडीज,

३०८

छोडैं कोनी ठौड पण
किया उडैं आ आख ?
घणी अचपली दीठ री
कोनी दीसैं पाख,

३०९

आसी परणन नैं तनैं
मरण फूठरो पीव,
हथलेवैं री वगत पण
मती लकोई जीव,

३१०

राम नहीं रावण नहीं
अै विचार रा नांव,
एक सुबुध दूजो कुबुध
वाल्यो निज रो गांव,

३११

जावक नान्ही कांकरी
नीर गहन गंभीर,
पण मत फेंकी पीड़ स्यूं
सगला हुवै अधीर,

३१२

वडा हुवै वां नै नहीं
निज वडपण रो मोद!
मोती री मैं मावड़ी
नहीं सीप नैं वोध,

३१३

अपग हुवै सत कद मंडै
भोला उण रा खोज?
क्यूं निरथक भमतो फिरै
सत अंतस मे सोझ,

३१४

करै नहीं ज्यूं रूप नै
विम्बित आंधो काच,
विनां हुया निरमल हियो
कद अणभूतै साच?

३१५

मुगती रो गेलो नहीं
बंधी बंधाई लीक,
वठै पूगसी सत वै
चालै जका अलीक,

३१६

वाथ घाल ली सबद रै
वणग्यो सबद वलाय,
सिघ अपड़ियो स्यालियो
जे छोडै तो खाय,

३१७

चावै देणी साच पर
जे तू थारी छाप?
सात्र सिरक ज्यासी परै
वा कद सवै धिणाप?

३१८

ममता नै समता वणा
अनुकंपा में जाग,
जणां समझसी जीव तू
कांईं राग अराग?

३१९

घणो गहन आतम धरम
पूगै बठै अभेद,
दीठ साध लै लोपसी
बीं खिण सगला़ भेद,

३२०

हेला मारै मजल नै
धरै न आघो पंड,
संवटीजै गेलो नहीं
इंयां हुयां स्यूं एंड,

३२१

मुगती इंछै जीव जे
कोनी छूट्यो राग,
विणसै इंच्छया बीज जद
उगसी हियै अराग,

३२२

ममता त्यागै पर्ण हुवै
निरमम कोनी संत,
वीतराग रो अरथ है
करुणा सिन्धु अनन्त,

३२३

हुवै न जिण रै हेत में
रंच सुवारथ गंध,
मिनखपणै रा पुसब वै
सांसां बसै सुगंध,

३२४

नहीं तूंतड़ै में घलै
ज्यूं काढचोड़ो धान,
वियां न पाछो वावड़ै
वचन कयोड़ो जाण,

३२५

जुड़ै नहीं ज्यूं रुंख स्यूं
एकर झड़ियो पान,
वियां न फाट्यो मन मिलै
निरथक खेंचाताण,

३२६

हेम कांचली तावड़ी
धानी साड़ी खेत,
वण ठण बैठी गोरडी
मारवाड री रेत,

३२७

आड़ावल़ माथै मुगट
चामल़ गल़ रो हार,
जैसाणं पग रोपिया
मारवाड मोट्यार,

३२८

माथै अंबर मोलियो
कांधै सूरज ढाल,
लू रो लपको टोरड़ो
मरुधर मरद मुंछाल,

३२६

रवै कुअै रै मांय नै
जियां कुअै री छांव,
वियां मतलबी मिनख रै
भंवूं न बीं रो गांव,

३३०

रात डावड़ी वगत री
आंचल ओलूं ले'र,
सूरज रो दिवलो चढी
फेरूं गगन मुंडेर,

३३१

देस नहीं मरुदेस सो
मृगमद जिसी न गन्ध,
सुरसत रै भंडार में
दूहै जिस्यो न छन्द,

पांच महाव्रत

अहिंसा

जे मैं मारूं, सामलो
हणसी म्हारा प्राण,
नहीं अहिंसा आ जकी
उपजै डर रै पाण !

ओ सरीर रो धरम है
कोनी तत रो ग्यान,
जको जीण री वासणा
परतख हिंसा जाण !

थकां सामरथ छोड दै
जद विवेक स्यूं राग,
जुडै अहिंसा अभय स्यूं
वो है सहज विराग।

खमा भाव आतम धरम
अनुकंपा मे मूल,
दीठ हुया अंतरमुखी
कुण कांटा, कुण फूल !

सत्य

मुगत दीठ राख्यां बिन्यां
कद अणभूतै साच?
परतख करसी साच नैं
अनेकांत रो काच,

कियां अकथ नैं कथ सकै
सबद बापड़ो थूल?
सबद मोह में मत पड़ी
मारग ज्यासी भूल।

साच दूध पण काचरी
मन रा मिनख विकार,
दही जमैं बुध रो हुया
अंतरमन अविकार।

अपरिग्रह

परिगह मूल विकार रो
संचै मोटो पाप,
तिसणा स्यू तिसणा वधै
कोनी आवै धाप,

करै काल री चितणा
मती काल नै भूल,
खिण स्यू आगै सोच मत
खिण है साच समूल,

चावै मुगती जींवतो
कर निज नै निरलेप,
लोभ कतरणी मत चला
सिवै जतो ही नेप !

अस्तेय

तिसणावश जे मिनख लै
वनफल् नै ही तोड़,
वा चोरी खिण में वंधै
करम चीकणां कोड़,

नहीं दरव स्यू भाव स्यू
लागै चेतण आल्
तत पाचां नै सेव कर
आडी संजम पाल्,

मन स्यूं ओलै रह सकै
चोरी कोनी जीव,
पड्यो अंधेरै मे रवै
छानो कदै न घीव?

ब्रह्मचर्य

सुख ही दुख रो बीज है
मन आसूदो खेत,
मत वो पड़सी लाटणो
मिनख वगत सर चेत,

जे चावै इण खेत मे
निपजै परमानन्द,
विरमचरज स्यूं बांध दै
उरजा आडो बंध,

घास फूस कोनी वधै
कोनी चढै निनाण,
रम आतम में जीवड़ो
ज्यासी बण भगवान !

एप सी उगणीन